आज की मुरली का सहज सार और सहज पुरुषार्थ ---------- Date: 07-02-15

हम आत्माओं को ज्ञान और योग की सही समझ देकर, योग का महत्व समझाने वाले, ज्ञान-सागर बाप ने कहा, आत्मा रुपी ज्योति में ज्ञान-योग का धृत डालो तो ज्योत जगी रहेगी. तुम्हें ज्ञान और योग का कॉन्टरास्ट अच्छी रीति समझाना हैं.

इस ईश्वरीय पढ़ाई के चार मुख्य सबजेक्टस है - ज्ञान, योग, धारणा और सेवा. इन चारों में ज्ञान मुख्य है, क्योंकि ज्ञान से हमें समझ मिलती है आत्मा, परमात्मा और सारे सृष्टि चक्र के आदि-मध्य-अन्त की. ज्ञान का उपयोग कर के ही हम आत्मायें, परमात्मा से योग लगाती है. वैसे ही धारणा और सेवा भी ज्ञान के आधार से ही करते हैं. लेकिन आत्मा में धारणा करने का और सेवा में सफलता प्राप्त करने बल योग से मिलता हैं.

ज्ञान मुख्य सबजेक्ट है लेकिन योग का महत्व ज्ञान से भी ज्यादा हैं. योग के आधार से ही, १. हम आत्माओं के जन्म-जन्मान्तर के पाप भस्म होते हैं. २. योग से ही हम आत्मायें सतोप्रधान बनती हैं. ३. योग से ही हम आत्मायें, पाप-आत्मा से पुण्य-आत्मा बनती हैं. ४. योग से ही स्वर्ग में ऊंच पद प्राप्त होता हैं. ५. योग से ही आत्मा दिव्य-गुणों और शक्तिओं से भरपूर बनती हैं. ६. योग से ही शक्तिमान बनी आत्माओं के लिए सब ईश्वरीय धारणायें सरल हो जाती हैं. ७. सेवा में भी ज्ञान की तलवार पर, योग का जोहर लगने से ही सफलता मिलती हैं. ८. हम आत्माओं को योग में ही माया विघ्न ड़ालती हैं. हमारा माया से युद्ध भी योग में ही होता हैं. अगर हम माया पर जीत पाकर बाबा से अच्छा योग लगाते है तभी हमें मायाजीत आत्मा का टाईटल मिलता हैं. ९. योग से ही हम सारे विश्व की आत्माओं और प्रकृति के पांच तत्वों की मनसा सेवा कर सकते हैं.

बाबा ने कहा, ज्ञान तो तुम किसी को भी समझा सकते हो लेकिन योग को थोड़े ही समझा सकेंगे. ज्ञान है विस्तार, योग है सार. ज्ञान तो तुम बहुत देते हो, योग के लिए तो सिर्फ कहेंगे अपने को आत्मा समझ बाप को याद करो.

बाबा ने आज सारी मुरली से ज्ञान और योग का कॉन्टरास्ट को अच्छी समझाने के लिए कहे गये कुछ महा-वाक्यों हम अपनी आत्मिक स्थिति में रहकर पढ़ेंगे तो बाबा से अच्छे योग का अनुभव करेंगे.

- बाबा कहते है बाप आकर तुम्हारी बुद्धि का ताला खोलते हैं. बाप आकर ज्ञान से तुम्हारी आत्मा की ज्योत जगाते हैं. लेकिन वह आत्मा रुपी ज्योत में तुम्हें ज्ञान-योग का धृत डालते रहना है तो ज्योत जगी रहेगी.

- बाबा कहते है मनुष्यों की आत्मायें तमोप्रधान बन गई है, उसकी ताकत एकदम कम हो गई हैं. अज्ञान के अंधेरे में आत्मा की ज्योत बहुत कम हो गई हैं. बाप आकर तुम्हारी बुद्धि को स्वच्छ बनाते हैं. ज्ञान का धृत डालते हैं जिसे आत्मा को अच्छे-बुरे, सच-और-झूठ की समझ मिलती हैं. ज्ञान और योग दोनों अलग चीज है. योग है अपने को आत्मा समझ निराकार बाप को परमधाम में याद करना.

- बाबा कहते हैं बच्चे जानते है कि हम आत्मा हैं, हमारा बाप परम आत्मा, परमात्मा है. वह कहते है मुझे याद करो, बस. इसमें ज्ञान की बात नहीं. यह सिर्फ याद है. ज्ञान का तो विस्तार है.

- बाबा कहते हैं तुम हमारे बच्चे हो ना, मैं तुम्हारा बाप हूँ. मेरे से योग लगाओ अर्थात याद करो. इसको ज्ञान नहीं कहेंगे. तुम आत्मायें कभी विनाश को नहीं पाते हो. एक शरीर छोड दूसरा लेते हो. यह है ज्ञान.

- बाबा कहते है मुझे याद करो, यह ज्ञान नहीं है. यह तो बाप डायरेक्शन देते हैं, इनको योग कहा जाता है. ज्ञान है सृष्टि चक्र कैसे फिरता है - उसकी नॉलेज. योग अर्थात याद. बच्चों का फर्ज है बाप को याद करना. वह है लौकिक, यह है पारलौकिक बाप.

- बाबा कहते हैं अपने को आत्मा समझ बाप को याद करो. बच्चों को पुरुषार्थ याद का ही करना है. ज्ञान तो बहुत सहज है. बाबा की याद में ही बच्चों कि माया से युद्ध होती है. लेकिन याद से ही आत्मायें पावन बनती है.

- बाबा कहते हैं तुम्हारी आत्मा जानती है यह सारी दुनिया अब खलास होनी है, अब बाबा के साथ घर चलना हैं. यह ज्ञान की बात सदैव तुम्हारी बुद्धि में रहनी चाहिए. इससे तुम्हारी देही-अभिमानी अवस्था बनेगी. यह बुद्धि में रखकर बाप को याद करेंगे तो बाप से योग अच्छा लगेगा. एक बाप के सिवाय और कोई याद न आये, कोई देह याद न आये. ऐसा योग से ही तुम्हारे विकर्म विनाश होगे. ऐसे योग से ही तुम्हारी कर्मेन्द्रियाँ बिल्कुल शांत और शीतल हो जायेगी.

- बाबा कहते हैं तुम मेरे योगेश्वर बच्चे हो. तुम ईश्वर से योग लगाते हो. यह योग सिखलाने वाला स्वयं ईश्वर बाप है. वह निराकार हैं. यह योग से ही तुम्हारे जन्म-जन्मांतर के पाप भस्म होते है. ईश्वर की याद को ज्ञान नहीं कहा जाता. ज्ञान सृष्टि चक्र को कहा जाता हैं.

- बाबा कहते हैं गीता में अक्षर भी है - मामेकम याद करो. इसका सही अर्थ भी बाप तुमको अब समझाते हैं. बाबा ने तुम्हें आत्मा का, परमात्मा का और घर का सारा ज्ञान दिया हैं. इसलिए अब तुम बाप को एक्यूरेट याद सकते हो, जिसको ही मामेकम याद कहा जाता हैं. ऐसी याद से ही तुम आत्मायें पतित से पावन बनते हो. तो बच्चों को लंबे समय के लिए बाप को याद करने का अभ्यास करना चाहिए.

ॐ शांति.

Thank You for Your Experiences/Feedbacks/Queries to Atma Bhai on a.brahmin.soul@gmail.com.